

Agricultural Regions of India

Dr. Sabiha Khan

कृषि प्रदेश

भारत में भौगोलिक विभिन्नताओं ने कृषि फसलों में भी अनेक विभिन्नताओं को जन्म दिया है। वर्षा, तापमान, समुद्र तल से ऊंचाई, भूमि का ढलान, मिट्टी और फसल आदि मिलकर कृषि में विविधता उत्पन्न करते हैं। विभिन्न विद्वानों और संस्थाओं द्वारा कृषि प्रदेशों का वर्गीकरण योजनाओं के निर्माण तथा कृषि प्रबंध हेतु विभिन्न भागों में किया गया है।

एक कृषि क्षेत्र का निर्माण निम्नलिखित में से एक या अधिक कारकों के आधार पर किया जाता है-

- भू-आकृतिक कारक, जैसे-स्थलाकृति, मृदा, नमी का स्तर तथा जलवायविक परिस्थितियां इत्यादि।
- कृषि पद्धतियों की विविधता।
- उस क्षेत्र विशेष में अपनाया जाने वाला फसल संयोजन।
- कृषि उत्पादकता।

कृषि क्षेत्रीकरण कई उद्देश्यों की पूर्ति करता है-

प्रथम, यह एक नियोजन उपकरण के रूप में कार्य करता है, क्योंकि यह कृषि को सुदृढ़ आर्थिक दृष्टिकोण से देखता है।

द्वितीय, किन्हीं दो क्षेत्रों की प्राकृतिक समानता से इन क्षेत्रों में एक साथ ही फसल संयोजन का निर्धारण होत

तृतीय क्षेत्रीकरण से उत्पादकता के सम्बंध में मौजूद स्थानिक विभेद स्पष्ट हो जाते हैं तथा निम्न उत्पादकता वाले क्षेत्रों के ली एक समेकित नीति बनाना आसान हो जाता है।

चतुर्थ, विभिन्न कृषि-आर्थिक कारकों के आधार पर कृषि क्षेत्रीकरण के माध्यम से अल्प वितीय संस्थानों का बेहतर उपयोग किया जा सकता है।

डॉ. रंधावा के कृषि क्षेत्र

डॉ. एम.एस. रंधावा द्वारा 1958 में अपनी योजना प्रस्तुत की गयी, जो अक्षांश, ऊंचाई, वायु तापमान, मृदा, फसल, प्राकृतिक वनस्पति तथा पशु संसाधन पर आधारित है। इन्होंने मुख्यतः जलवायविक परिस्थितियों के आधार पर भारत को पांच कृषि क्षेत्रों में विभाजित किया है। जो इस प्रकार है-

1. शीतोष्ण हिमालय क्षेत्र The Temperate Himalayan Region- इस क्षेत्र के दो मुख्य उप-क्षेत्र हैं-

- **आर्द्र पूर्वी हिमालय क्षेत्र The Eastern Himalayan:** इसके अंतर्गत सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश तथा पूर्वांचल की पहाड़ियां शामिल हैं। एक उच्च वर्षापात वाला क्षेत्र होने के कारण यह क्षेत्र घने वनों से आच्छादित है। निम्न भूमियों पर चावल तथा ढालों पर चाय उगायी जाती है।
- **पश्चिमी हिमालय क्षेत्र The western temperate Himalayan:** इसके अंतर्गत उत्तराखण्ड की कुमाऊं पहाड़ियां, हिमाचल प्रदेश का हिमालयी क्षेत्र तथा जम्मू व कश्मीर शामिल हैं। यह क्षेत्र घाटियों की एक श्रृंखला तथा मध्यम वर्षा के लिए पहचाना जाता है। कश्मीर, कांगड़ा एवं कुल्लू की घाटियों में चावल पैदा किया जाता है। ढालों पर सेब, अखरोट, चेरी, बादाम जैसी बागानी फसलों के साथ-साथ आलू एवं मक्का भी उगाया जाता है। ढालों पर पशुचारण गतिविधियां भी सामान्य होती हैं।

2. **उत्तरी शुष्क (या गेहूँ) क्षेत्र The Northern Dry (Wheat) Region:** इस क्षेत्र में पंजाब, हरियाणा, प. उत्तर प्रदेश, उत्तरी गुजरात, पश्चिमी मध्य प्रदेश एवं राजस्थान शामिल है। इस क्षेत्र में 75 सेंमी. से भी कम वर्षा होती है तथा यहां शीत ऋतु काफी ठंडी होती है। नहरों तथा कुंओं से प्राप्त सिंचाई की व्यापक सुविधाएं इस क्षेत्र की विशेषता है। इस क्षेत्र की प्रमुख फसलों में गेहूं, जौ, दाल, मक्का, ज्वार एवं बाजरा शामिल हैं। कपास एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक फसल है।

3. **पूर्वी नम (या चावल) प्रदेश The Eastern Wet (Rice) Region:** इस क्षेत्र के अंतर्गत पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, प. बंगाल, उत्तरी-पूर्वी राज्य, ओडीशा, तटीय आंध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु को शामिल किया जाता है। ग्रीष्म मानसून के दौरान इस क्षेत्र में 100 सेंमी. से अधिक वर्षा होती है। चावल प्रमुख खाद्यान्न फसल पर ज्वार, बाजरा एवं रागी जैसी शुष्क फसलें उगायी जाती हैं।

4. पश्चिमी नम क्षेत्र The Western Wet (Malabar) Region: इसके अंतर्गत केरल तथा कर्नाटक के पश्चिमी तटीय मैदान एवं पश्चिमी घाट शामिल हैं। यह उच्च वर्षापात तथा लैटेराइट व जलोढ़ मिट्टी वाला क्षेत्र है। निम्न भूमियों में चावल प्रमुख खाद्यान्न फसल है। पहाड़ी भागों में रबड़, काली मिर्च, इलायची तथा कॉफी जैसी पौध फसलें उगाई जाती हैं। तटीय भागों में नारियल, काजू टैपिओका आदि फसलें उगायी जाती हैं।

5. दक्षिणी क्षेत्र The Southern Coarse (Cereals) Region: इस क्षेत्र में प्रायद्वीपीय पठार तथा गंगा के मैदान के दक्षिणी भाग (उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक व तमिलनाडु) का विस्तृत भूभाग शामिल है। इस क्षेत्र में 100 सेंमी. से कम वर्षा होती है तथा यहां लाल, लेटेराइट एवं काली मिट्टियां पायी जाती हैं। इस क्षेत्र में सिंचाई की सुविधाएं सीमित हैं। ज्वार, बाजरा, मूंगफली, दालें तथा कपास आदि इस क्षेत्र में उगायी जाने वाली मुख्य फसलें हैं। चावल दक्षिणी भाग की तथा गेहूं उत्तरी भाग की प्रमुख खाद्यान्न फसलें हैं। सिंचित क्षेत्रों में गन्ना महत्वपूर्ण नकदी फसल है।

पी. सेनगुप्ता और जी.एस. दयाक का क्षेत्र

सेनगुप्ता और दयाक के द्वारा **भारत के आर्थिक क्षेत्रीकरण** शीर्षक से 1968 में भारत को 4 सम कृषि क्षेत्रों, 11 मध्यवर्ती क्षेत्रों तथा 60 सूक्ष्म क्षेत्रों में विभाजित किया गया। ये विभाजन कृषि तथा कृषि आगतों व निर्गतों (श्रम, सिंचाई, फसल गहनता, वर्षा तथा मृदा सूचक स्तर इत्यादि) के विभिन्न प्रकारों पर आधारित है। जो इस प्रकार है-

1. हिमालय कृषि क्षेत्र: इस कृषि क्षेत्र में वर्षा की विविधता पायी जाती है। यहां वार्षिक वर्षा औसतन 120 से.मी. से लेकर 250 से.मी. तक होती है। इस कृषि क्षेत्र के अंतर्गत हिमाचल प्रदेश, जम्मू एवं कश्मीर, कुमाऊं हिमालय, दार्जिलिंग, असम हिमालय, अरुणाचल प्रदेश आदि क्षेत्र आते हैं। कृषि की दृष्टि से यह क्षेत्र बहुत अनुकूल नहीं है, फिर भी कुछ फसलें हैं, जिनकी कृषि यहां की जाती है- गेहूं, धान, मक्का, चना और आलू। फलों का उत्पादन भी यहां किया जाता है।

2. पश्चिमी क्षेत्र: इस कृषि क्षेत्र को चार उपखण्डों में विभाजित किया जा सकता है- पूर्वी मैदान, प्रायद्वीपीय पठार, पूर्वी पहाड़ियां एवं पठार तथा पश्चिमी समुद्र तटीय प्रदेश। पूर्वी मैदान के अंतर्गत उपरी ब्रह्मपुत्र घाटी, निचली ब्रह्मपुत्र घाटी, पश्चिमी बंगाल, भागीरथी डेल्टा, ओडिशा के तटवर्ती क्षेत्र आदि आते हैं, प्रायद्वीपीय पठार के अंतर्गत छोटानागपुर पठार, उपरी महानदी बेसिन, ओडीशा की पहाड़ी, बस्तर का पठार तथा मध्यवर्ती मध्य प्रदेश आते हैं, पूर्वी पहाड़ियां एवं पठार के अंतर्गत मनुपिर, मिजो एवं गारो पहाड़ियां, मिकिर, कचर, खासी, जयंतिया और नागालैण्ड क्षेत्र आदि आते हैं तथा पश्चिमी समुद्र तटीय प्रदेश के तहत खम्भात तट, उत्तरी कोंकण तट, कर्नाटक तट, दक्षिणी कोंकण तट, उत्तरी और दक्षिण मालाबार तट आदि क्षेत्र आते हैं। इस क्षेत्र में वार्षिक वर्षा औसतन 100 से.मी. से लेकर 125 से.मी. तक होती है। आर्द्र कृषि क्षेत्र में उत्पादित होने वाली फसलों में प्रमुख हैं- धान, तिलहन, गेहूं, मोटे अनाज, चाय, नारियल, चना, गन्ना, जूट आदि।

3. अल्पाद्रि कृषि क्षेत्र: इस क्षेत्र को स्थूल रूप से तीन उप- खंडों में विभाजित किया जाता है- ऊपरी एवं मध्य गंगा का मैदान, अल्पाद्रि प्रायद्वीपीय पठार तथा अल्पाद्रि समुद्रतटीय क्षेत्र। उपरी एवं गंगा का मैदान के अंतर्गत उपरी गंगा का तारे क्षेत्र, पूर्वी उत्तर-प्रदेश, मध्य गंगा का मैदान, दक्षिणी गंगा का मैदान, अवध का मैदान आदि क्षेत्र आते हैं। अल्पाद्रि प्रायद्वीपीय दक्षिणी आंध्र तट, कृष्णा- गोदावरी डेल्टा, तमिलनाडु का समुद्र तट, दक्षिण पूर्वी तमिलनाडु, गुजरात का समुद्र तट आदि आते हैं। यहां वार्षिक वर्षा 75 से.मी. से लेकर 100 से.मी. तक होती है। विभिन्न क्षेत्रों में वर्षा के औसत में विविधता पायी जाती है। सिंचाई की सुविधा प्राप्त होने पर कृषि कार्य को प्रोत्साहन मिलता है। इस कृषि क्षेत्र में मुख्य रूप से निम्न फसलें उपजायी जाती हैं- गेहूं , धान, गन्ना, चना, मक्का, मोटे अनाज, कपास, मूंगफली, तिलहन और तम्बाकू आदि।

4. शुष्क कृषि क्षेत्र: इसके अंतर्गत देश के वे भाग आते हैं, जहां कृषि कार्य के लिए जल की विशेष कमी होती है। इस क्षेत्र को दो उप-खण्डों में विभक्त किया जाता है- शुष्क उत्तरी-पश्चिमी प्रदेश तथा शुष्क प्रायद्वीपीय पठार। शुष्क उत्तरी-पश्चिमी मैदान के अंतर्गत राजस्थान का मरुस्थलीय मैदान, अर्ध-मरुस्थलीय मैदान, उत्तरी पंजाब का मैदान, अरावली की पहाड़ियां, सौराष्ट्र व कच्छ क्षेत्र आदि आते हैं जबकि शुष्क प्रायद्वीपीय पठार के अंतर्गत तपती-नर्मदा दोआब, ऊपरी गोदावरी घाटी, उत्तरी भीमा-कृष्णा नदी, तुंगभद्रा घाटी, रॉयल सीमा का पठार आदि क्षेत्र आते हैं। इस कृषि क्षेत्र में उपजायी जाने वाली फसलें हैं-कपास, तिलहन, मोटे अनाज, गेहूं, मूंगफली, चना आदि।

<http://www.vivacepanorama.com/>

- The scheme suggested by the Indian Council for Agricultural Research (**ICAR**) is simple and comprehensive and is reproduced here. It is based on the predominance of crops and crop associations. Accordingly India can be divided into following agricultural regions:

1. Rice-Jute-Tea Region:

- This vast region includes lowlands, valleys and river deltas in the states of Assam, Arunachal Pradesh, Tripura, Meghalaya, West Bengal, Orissa, northern and eastern Bihar parts of Jharkhand and Chhattisgarh and Tarai region of Uttar Pradesh.
- The rainfall varies from 180 to 250 cm. Rice are the predominant crop due to fertile alluvial soils, abundant rainfall and high summer temperatures. Jute is mainly grown in the Hugli basin of West Bengal but some areas have been brought under jute cultivation in Assam, Meghalaya, Tripura, Orissa and Tarai region of U.P. Tea is mainly grown in Assam, Darjeeling and Jalpaiguri areas of West Bengal and Tripura. Sugarcane and tobacco are grown in Bihar. Coconut is grown in coastal areas. Mango, pineapple, betel leaves, bananas, jack fruits, and oranges are the main fruit crops.

2. Wheat and Sugarcane Region:

- This region comprises Bihar, Uttar Pradesh, Punjab, Haryana, Western Madhya Pradesh and north eastern Rajasthan. Most of the areas have rich fertile alluvial soils with some parts having black and red soils. Rainfall is moderate, large part of which is caused by south-west monsoons in summer. Some rainfall is caused by western disturbances in winter.
- Irrigation is a vital input in drier areas. As its name indicates, this region is dominated by wheat and sugarcane cultivation. The main wheat belt of India extends over Punjab, Haryana, Ganga-Yamuna doab of Uttar Pradesh and north-eastern Rajasthan. Sugercane is mainly grown in Uttar Pradesh and contiguous parts of Bihar. Rice, pulses and maize are the other important crops.

- **3. Cotton Region:**
- It spreads on the regur or black cotton soil area of the Deccan plateau, where the rainfall varies from 75 to 100 cm. Obviously, cotton is the main crop but jowar, bajra, gram, sugarcane, wheat, etc. are also grown.
- **4. Maize and Coarse Crops Region:**
- Western Rajasthan and northern Gujarat are included in this region. The rainfall is scanty and is normally below 50 cm. Agriculture is possible only with the help of irrigation. Maize is mainly grown in the Mewar plateau where wheat and ragi are also produced. In the southern part, rice, cotton and sugarcane are grown. Bajra and pulses are grown throughout the region.

- **5. Millets and Oilseeds Region:**

- This region includes areas of poor soils and broken topography in Karnataka plateau, parts of Tamil Nadu, southern Andhra Pradesh and eastern Kerala. The rainfall varies from 75 to 125 cm. The millets include bajra, ragi and jowar while the oilseeds grown are groundnut and castor. Pulses are also grown. Mangoes and bananas are important fruit crops.

- **6. Fruits and Vegetable Region:**

- This region extends from Kashmir Valley in the west to Assam in the east. The rainfall varies from 60 cm in the west to 200 cm in the east. Apple, peach, cherries, plum, apricot are grown in the west while oranges are important in the east. Besides, rice, maize, ragi, potatoes, chillies and vegetables are also grown.



THANK YOU

Disclaimer: The content displayed in the PPT has been taken from variety of different websites and book sources. This study material has been created for the academic benefits of the students alone and I do not seek any personal advantage out of it.